सब से बडी दौलत

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

सब से बडी दौलत सुकुन और आफीयत हे

दुन्या मे रहकर दुन्या मे मदहोश ना रहना इन्सान के लिये सब से बडा सुकुन का जरीया हे, ऐसा शख्स जाहीरी तौर पर चाहे कितना ही बदहाल क्यू न हो, मगर उसे अदरूनी तौर पर वो दिल का इतमीनान नसीब होता हे, जो बडे बडे मालदारो को भी नसीब नही होता, इसलिये नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फरमाया दुन्या से बेरगबती दिल और बदन दोनो के लिये राहत का जरीया हे.

चार चीझे और उन्के खरीदार

हजरत इशा(अलै) की इबलीस से मुलाकात हुई वो चार गधों को हांक रहा था इन गधों पर सामान रखा

हुवा था, हजरत इशा(अलै) ने इबलीस से उन गधों के बारे मे और इस पर रखे हुवे सामान के मुताल्लिक पूछा इबलीस ने जवाब मे कहा तिजारत का सामान इन गधों पर हे और खरीदने वालो को तलाश कर रहा हू.

हजरत इशा(अलै) ने इस की बात सुनकर पूछा पहले गधे पर कया सामान हे, इबलीस ने कहा जुलम, हजरत इशा(अलै) ने पूछा उसे कौन खरीदेगा, इबलीस ने कहा बादशाह.

दूसरे गधे के बारे मे पूछा इस पर कया रखा हुवा हे, इबलीस ने कहा हसद, हजरत इशा(अलै) ने पूछा इसे कौन खरीदेगा, शैतान कहने लगा उल्मा.

हजरत इशा(अलै) ने पूछा तीसरे गधे पर कया सामान हे, इबलीस ने कहा खियानत, हजरत इशा(अलै) ने पुछा उसे कौन खरीदेगा, शैतान ने कहा कि ताजिर.

फिर चौथे गधे के बारे मे पूछा इस पर कया रखा हुवा हे, इबलीस ने कहा मक्कार और फरेब, धोके बाजी, हजरत इशा(अलै) ने पूछा इसे कौन खरीदेगा, शैतान ने कहा औरते. (अल मुस्तजरफ)

हलाल रिज़्क को काफी समझना

हराम रिज़्क के तमाम जरियो से बचकर सिर्फ हलाल रिज़्क को काफी समझा करे चाहे मिकदार मे ब-

जाहिर कम ही क्यू ना हो, क्युकी नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया कि कल कियामत के दिन किसी इन्सान का कदम अल्लाह के सामने से हठ नही सकता यहा तक कि वह पांच सवालो के जवाब देदे. इन पांच सवालात मे से दो सवाल माल के मुताल्लिक हे कि माल कहा से कमाया और कहा खर्च किया?

इसलिये हर मुसल्मान को चाहिये कि सिर्फ हलाल जरियो को ही काफी समझा करे, जैसा कि नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया "हराम माल से जिस्म की बढोतरी ना करो क्युकी इससे बेहतर आग हे" इसी तरह नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया "वह इन्सान जन्नत मे दाखिल नही होगा जिस्की परवरिश हराम माल से हुई हो, ऐसे शख्स का ठिकाना जहन्नम हे". ये नबी करीम صلى الله عليه وسلم का फरमान हे कि "हराम खाने, पीने और हराम पहनने वालो की दुवाऐ कहा से कबूल हो". (मुस्लिम)

रिज़्क का निजाम

अखबार मे नकल हे रोटी गोल नही होती और ना खाने वाले के सामने रखी जाती हे, यहा तक के ३६० कारीगरो के हाथ घूमते हे और एक के बाद दुसरे इस्को हाथो हाथ लेते हे इन मे सब से पहले

हजरत मीकाइल(अलै) हे जो रहमत के खजानो से पानी को नापते हे, फिर वो फरिश्ते जो आबर को चलाते हे, फिर सुरज, चांद व आसमान और हवा के फरिश्ते और जमीन के जानवर और सब से आखिर मे वो कारीगर जो रोटी पकाने वाला हे.

परदेसीयो की तरह रहो

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर(रदी) से रिवायत हे नबी करीम ﷺ ने मेरे दोनों शाने पकडे फिर फरमाया दुन्या मे इस तरह रहो जेसे तू परदेसी हे जिस को दुन्या मे कुछ दिन के लिये रहना होता हे, इसलिये उसका वहां दिल नहीं लगता, या इस तरह रहो जेसे तू रास्ते मे चला जा रहा हे, जिसका बिलकुल कयाम नहीं और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर(रदी) फरमाया करते थे जब शाम का वकत आये तो सुबह के वकत का इन्तेजार मत कर, और जब सुबह का वकत आये तो शाम के वकत का इन्तेजार मत कर. (बुखारी)

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.